श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 1 वर्ष, अंक 27, पृष्ठ 4, मूल्य 1.00

अखण्ड भारत सन्देश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज बुधवार, 2 सितम्बर, 2020

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट

उत्तर प्रदेश में वीकेंड लॉकडाउन खत्म

सिर्फ रविवार को रहेगी पूर्ण तालाबंदी

लखनऊ, जेएनएन। कोरोना वायरस संक्रमण के कारण लॉकडाउन के बाद अब अनलॉक में भी योगी आदित्यनाथ सरकार लगातार नये प्रयोग कर रही है। राहतों से भरे अनलॉक-4 के साथ ही प्रदेश सरकार ने व्यापारियों और कारोबारियों को एक और बड़ी राहत दी है। कोरोना संकट काल में व्यापारिक परेशानियां झेल रहे बड़े वर्ग की समस्या को देखते हुए योगी सरकार ने शनिवार और रविवार की दो दिवसीय साप्ताहिक बंदी खत्म कर सिर्फ रविवार को ही प्रदेशभर में साप्ताहिक बंदी का फैसला किया है। अब प्रदेश में बाजार सुबह नौ से रात नौ बजे तक खोलने का फैसला किया गया है। इसके साथ ही सभी जिलों के लिए नए दिशा-निर्देश भी जारी कर दिए गए हैं। सीएम योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को अपने सरकारी आवास पर टीम-11 के साथ अनलॉक के साथ ही प्रदेश की कानून-व्यवस्था की समीक्षा की। इस बैठक के बाद सीएम ने अफसरों को हर स्तर पर कोविड-19 के खिलाफ बेहतर से बेहतर काम करें। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अब शुक्रवार रात से सोमवार सुबह तक की बंदी को समाप्त किया जा रहा है। अनलॉक-4 में रविवार को बंदी रहेगी। इसके अलावा हर रोज बाजार सुबह 9 बजे से रात्रि 9 बजे तक खुलेंगे। उत्तर प्रदेश में अब सिर्फ रविवार को साप्ताहिक बंदी होगी। उन्होंने कहा कि सभी

शहर तथा गांव में बाजारों की साप्ताहिक बंदी रविवार को निर्धारित की जाए। शनिवार को भी दुकानें खुलेंगी। शनिवार रात 12 बजे से रविवार रात 12 बजे तक पूरी तरह से बंदी रहेगी। कोरोना वायरस के बढ़ते प्रसार को योगी आदित्यनाथ सरकार ने पहले वीकेंड लॉकडाउन लगाने का बड़ा फैसला किया था। इसके तहत शुक्रवार रात से रविवार तक पूरा लॉकडाउन लगाया जाता है लेकिन अब ऐसा नहीं होगा। अब प्रदेश में हर जगह पर बाजार केवल रविवार को बंद रहेगा। रविवार छोड़ बाकी दिन 12 घंटे यानी सुबह नौ से रात नौ बजे तक दुकानें खुल सकेंगी। योगी आदित्यनाथ सरकार ने अब वीकेंड लॉकडाउन की व्यवस्था खत्म कर दी है। अब शनिवार को भी बाजार खुलेंगे और एक तरह से वीकेंड लॉकडाउन खत्म हो गया। मुख्य सचिव आरके तिवारी ने बताया कि अब प्रदेश भर में छह दिन बाजार और प्रतिष्ठान खुलेंगे। दुकानें आदि खुलने के समय प्रतिदिन सुबह नौ से रात नौ बजे तक होगा। वहीं, रविवार को पूर्ण साप्ताहिक बंदी रहेगी।

लखनऊ व कानपुर को लेकर गंभीर हों अफसर

राजधानी लखनऊ के साथ कानपुर में कोरोना वायरस के बढ़ते एक्टिव केस को लेकर उन्होंने दोनों जगह पर अफसरों से माइक्रोएनालिसिस करते हुए कार्य योजना बनाकर शीघ्र लागू करने का निर्देश दिया। उन्होंने निर्देश दिया कि लखनऊ में तो विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम गठित करें। इसमें केजीएमयू के साथ एसजीपीजीआइ की मदद भी ली सकती है। इस दौरान विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम डिजिटल प्लेटफॉर्म पर स्वास्थ्य संबंधी परामर्श प्रदान करें। इसके साथ ही प्रदेश में अब कांटेक्ट ट्रेसिंग, सर्विलांस और डोर टू डोर सर्वे का कार्य तेजी से कराएं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बैठक में कानून-व्यवस्था को मजबूती देने के साथ ही विकास योजनाओं को गति प्रदान करने के निर्देश दिए हैं। इस दौरान कृषि उत्पादन आयुक्त, अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास आयुक्त, अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव तथा विभागाध्यक्ष अपने अधीनस्थ कार्यालयों का निरीक्षण करें। सभी मंडलायुक्त अपने मंडल में 50 करोड़ से अधिक राशि के विकास कार्यों की समीक्षा करें। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि बाढ़ प्रभावित जिलों में फसलों को हुए नुकसान का सर्वे कराकर शीघ्र वहां पर मुआवजा वितरित करें। सीएम योगी आदित्यनाथ जल्दी ही उद्योग बंधु की वर्चुअल बैठक में उद्यमियों से संवाद करेंगे। इसके साथ ही वह जीएसटी के तहत राजस्व संग्रह तथा स्मार्ट सिटी मिशन एवं अमृत योजना की समीक्षा करेंगे।

इलाहाबाद हाई कोर्ट ने उत्तर प्रदेश के रेस्टोरेंट्स और कैफे में चल रहे हुक्का बार पर लगाई रोक

लखनऊ, जेएनएन। इलाहाबाद हाई कोर्ट ने कोरोना वायरस के संक्रमण को देखते हुए उत्तर प्रदेश रेस्टोरेंट, कैफे और अन्य स्थानों पर चल रहे हुक्का बार को तत्काल प्रभाव से बंद करने का आदेश दिया है। कोविड-19 के संक्रमण के मद्देनजर हुक्का बार बंद करने के संबंध में एक विधि छात्र ने हाई कोर्ट को पत्र लिखा था, जिसको संज्ञान में लेते हुए कोर्ट ने यह फैसला सुनाया। हाई कोर्ट ने यूपी के मुख्य सचिव को इस आदेश का तत्काल प्रभाव से पालन कराने के निर्देश दिए हैं। यह आदेश न्यायमूर्ति शशिकांत गुप्ता व न्यायमूर्ति शमीम अहमद की खंडपीठ ने लखनऊ विश्वविद्यालय के एलएलबी छात्र हरगोविंद पांडेय के पत्र पर कायम जनहित याचिका की सुनवाई करते हुए दिया है।

इलाहाबाद हाई कोर्ट ने उत्तर प्रदेश में हुक्का बार पर रोक लगा दी है। हाई कोर्ट ने मुख्य सचिव को आदेश दिया है कि वह किसी भी रेस्टोरेंट व कैफे में हुक्का बार चलाने की अनुमति न दें। कोर्ट ने मुख्य सचिव

से 30 सितंबर तक इस आदेश के अनुपालन की रिपोर्ट मांगी है। महानिबंधक को आदेश की प्रति मुख्य सचिव व प्रदेश के सभी जिलाधिकारियों को अनुपालन के लिए भेजने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने अधिवक्ता विनायक मित्तल को स्वतः कायम जनहित याचिका पर पक्ष रखने के लिए न्यायमित्र नियुक्त किया है।

इलाहाबाद हाई कोर्ट ने कहा कि प्रदेश में कोरोना संक्रमण का प्रकोप तेजी से फैल रहा है। हर दिन कोरोना संक्रमितों की संख्या बढ़ रही है। हाई कोर्ट ने इसके फैलाव को रोकने के लिए मुख्य सचिव को रोडमैप तैयार करने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने कहा कि लॉकडाउन किया गया था, उसके बावजूद कोरोना वायरस का संक्रमण जंगल की आग की तरह फैलता जा रहा है। यह मानव जीवन के अस्तित्व के लिए खतरा बन गया है। हम घने अंधेरे जंगल के बीच खड़े हैं। कल क्या होगा इसका पता नहीं है?

इलाहाबाद हाई कोर्ट ने कहा कि यदि रेस्टोरेंट व कैफे में हुक्का बार पर प्रतिबंध नहीं लगाया गया तो यह सामुदायिक संक्रमण का रूप ले लेगा। इसके मद्देनजर छात्र ने अधिकारियों को पत्र लिखा था, लेकिन कोई कार्यवाई नहीं की गयी। इस पर कोर्ट ने भी मुख्य सचिव को कारण बताओ नोटिस जारी की कि क्यों न याचिका स्वीकार कर ली जाय? लेकिन कोई जवाब नहीं आया। इसके बाद कोर्ट ने सख्त रुख अपनाते हुए हुक्का की अनुमति न देने का समादेश जारी कर पालन करने का निर्देश दिया है।

दरअसल, पिछले दिनों लखनऊ विश्वविद्यालय में लॉ की पढ़ाई करने वाले छात्र हरगोविंद दुबे ने हाई कोर्ट को एक पत्र लिखा, जिसमें कहा गया था कि राज्य के लगभग हर जिले में काफी संख्या में हुक्का बार चल रहे हैं। इन हुक्का बार से कोरोना वायरस संक्रमण के तेजी से फैलने की आशंका है। ज्यादातर युवा यहां जाते हैं। इस पत्र का इलाहाबाद हाई कोर्ट संज्ञान लिया और प्रदेश सरकार से जवाब तलब किया। यही नहीं हाई कोर्ट ने पत्र को जनहित याचिका में भी तब्दील कर दिया।

भारतीय सेना ने ब्लैक टॉप चोटी पर जमाया कब्जा

अब LAC के उस पार चीनी सैनिकों पर रहेगी सीधी निगाह

नई दिल्ली, संजय मिश्र। पूर्वी लद्दाख में चीन की ताजा सैन्य चालबाजी को लगातार दूसरे दिन नाकाम करने के साथ ही भारतीय सेना ने पैंगोंग झील के दक्षिणी किनारे की एक अहम रणनीतिक चोटी पर अपना कब्जा जमा लिया है। 29-30 अगस्त की रात चीनी सैनिकों के घुसपैठ में नाकाम होने के बाद 31 अगस्त को चीनी सेना ने दुबारा इसी इलाके में अतिक्रमण का प्रयास किया। मगर भारतीय सैनिकों ने चीनी सेना के इरादों को ध्वस्त करते हुए ब्लैक टॉप हिल के रूप में चर्चित इस चोटी पर कब्जा जमा लिया है।

भारतीय सेना के इस कदम से वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर पैंगोंग झील के इलाके में भारतीय सैनिकों की स्थिति मजबूत हो गई है। इससे बौखलाए चीन ने भारतीय सेना पर उसकी संप्रभुता का उल्लंघन करते हुए एलएसी के अतिक्रमण का आरोप लगाया जिसे भारत ने खारिज करते हुए कहा कि एलएसी पर चीन भड़काने वाली हरकत कर रहा है। चीन की बौखलाहट और सीमा पर तनातनी के नये विवाद से पनपे हालातों की रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने तीनों सेना के शीर्ष नेतृत्व के साथ गहन समीक्षा की और सुरक्षा एजेंसियों को हर स्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहने को कहा। वहीं, एलएसी के नये गतिरोध पर भारत और चीन के बीच मंगलवार को लगातार दूसरे दिन ब्रिगेडियर स्तर की वार्ता भी हुई।

पैंगोंग के दक्षिणी किनारे के इलाके में भारतीय सैनिकों की मजबूत स्थिति से बढ़ी चीन की बेचैनी को देखते हुए इस आशंका से इन?कार नहीं किया जा रहा कि चीनी सैनिक जवाबी पलटवार के लिए सीमा पर दूसरे रणनीतिक इलाकों में खुराफात कर सकते हैं। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने सीडीएस जनरल बिपिन रावत और तीनों सेनाओं के प्रमुखों के साथ दो घंटे से अधिक चली बैठक में इस मसले पर गहन विचार विमर्श किया। सैन्य मोर्चे के अलावा कूटनीतिक तौर पर चीन को थामने के लिए राजनाथ सिंह, विदेश मंत्री एस जयशंकर और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल के बीच अलग से विशेष मंत्रणा बैठक हुई।

चीनी सैनिकों की 29-30 अगस्त की रात पैंगोंग झील के दक्षिणी किनारे की चोटी पर कब्जा करने के प्रयासों

को भारतीय सैनिकों ने नाकाम कर दिया था। करीब 500 चीनी सैनिक एलएसी पर अपनी रणनीतिक बढ़त के लिए इस चोटी पर कब्जा करने के मसूंबे से आए थे। भारतीय सैनिकों के साथ कुछ घंटे चली तनातनी और झड़प के बाद चीनी सैनिक पीछे लौटने को बाध्य हुए। 31 अगस्त की रात को भी चीनी सैनिक घुसपैठ के इरादे से आ रहे थे, तो भारतीय सैनिकों ने माइक पर उन्हें आगाह किया कि उन्हें देख लिया गया है, इसलिए हरकत से बाज आएं। उसके बाद चीनी सैनिक ने कोशिश नहीं की।

पैंगोंग त्सो झील के दक्षिण किनारे के निकट की यह चोटी भारत के ठाकुंग इलाके में है, जहां अब भारतीय सैनिक मजबूत स्थिति में जमे हैं। इस चोटी से एलएसी के उस पार चीनी सैनिकों और उनके वाहनों की आवाजाही पर भारतीय सैनिकों की सीधी निगाह है, जो सैन्य तनाव के मौजूदा माहौल में रणनीतिक रूप से बेहद अहम है। इसीलिए चीन ने ठाकुंग के करीब एलएसी के अपने इलाके में अपने सैनिकों की तैनाती की संख्या बढ़ा दी है। इसके जवाब में भारतीय सेना ने भी किसी चीनी दुस्साहस को रोकने के लिए चुशूल के रेजांग लॉ और रिकिन लॉ इलाके में अपने सैनिकों की संख्या में इजाफा कर दिया है। पैंगोंग त्सो के दक्षिणी इलाके में स्थित ब्लैक टॉप की यह चोटी एलएसी पर भारतीय इलाके में हैं। लेकिन इस चोटी पर दोनों देशों के सैनिक अभी तक आते-जाते नहीं थे। एलएसी पर घुसपैठ का नया मोर्चा खोलने के लिए चीनी सेना ने इस चोटी पर कब्जे की कोशिश की। भारतीय सेना ने पहले चीनी कोशिश को नाकाम किया और फिर चोटी को पूरी तरह अपने नियंत्रण में ले लिया।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अनुराग श्रीवास्तव ने दो दिन में दूसरी बार चीनी अतिक्रमण के प्रयासों को नाकाम करने की पुष्टि करते हुए कहा कि 31 अगस्त को जब दोनों देशों के कमांडर स्तर की वार्ता चल रही थी, तब चीनी सैनिकों ने भड़काने वाली कार्रवाई की। लेकिन भारतीय सैनिकों के समय पर की गई रक्षात्मक कार्रवाई के चलते एकतरफा यथास्थिति को बदलने के चीनी सेना के मंसूबों को रोका गया। भारतीय सेना की इस जवाबी कार्रवाई को ही चीन अपनी संप्रभुता के खिलाफ अतिक्रमण बताते हुए अपनी बौखलाहट जाहिर कर रहा है। मोर्चे के हालात पर दोनों देशों के ब्रिगेडियर स्तर की सोमवार को हुई पहली बैठक में कोई ठोस नतीजा नहीं निकला। सूत्रों के मुताबिक चीन ने इस दौरान अपने इलाके में घुसपैठ की बात उठाई तो भारत ने भी चीनीअतिक्रमण का मुद्दा उठाया। इसीलिए मंगलवार को दूसरे दिन भी गतिरोध पर ब्रिगेडियर स्तर की वार्ता हुई जिसके नतीजे सामने आने बाकी हैं

राजीव कुमार बने भारत के नए चुनाव आयुक्त

नई दिल्ली, एएनआइ। भारत के नए चुनाव आयुक्त के रूप में राजीव कुमार ने पदभार ग्रहण कर लिया है। वह मुख्य चुनाव आयुक्त सुनील अरोड़ा और चुनाव आयुक्त सुशील चंद्रा को भारत निर्वाचन आयोग में जोइन करेंगे। राजीव कुमार पूर्व वित्त सचिव रहे हैं। उनको पिछले महिने नया निर्वाचन आयुक्त नियुक?त कर दिया था, जहां मंगलवार को उन्होंने पदभार ग्रहण किया। उनकी नियुक?ती की जानकारी विधि मंत्रालय ने अधिसूचना जारी करके दी थी। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने उनके पदभार ग्रहण करने की तिथि से उनकी नियुक्ति को मंजूरी दे दी थी। राजीव कुमार 1984 बैच के झारखंड कैडर के आइएएस अधिकारी हैं। राजीव कुमार को पिछले साल जुलाई में वित्त

सचिव नियुक्त किया गया था। उन्होंने पिछले तीन दशकों में कई सेक्टरों में नौकरशाह के तौर पर काम किया है। उन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को मजबूत करने की केंद्र की योजना को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसके अलावा राजीव कुमार ने प्रधानमंत्री जनधन और मुद्रा ऋण जैसी योजनाओं के क्रियान्वयन पर भी काफी काम किया है। राजीव कुमार मूलतः उत्तर प्रदेश के रहने वाले हैं। वे एक फरवरी, 1993 से एक जून, 1996 तक रांची के उपायुक्त रहे। इसके अलावा वे कार्मिक विभाग में विशेष सचिव, प्राथमिक शिक्षा निदेशक और उद्योग निदेशक समेत झारखंड भवन, नई दिल्ली में अतिरिक्त स्थानीय आयुक्त और स्थानीय आयुक्त पद पर रहे। केंद्रीय प्रतिनियुक्ति के दौरान वर्ष 2012 से उन्होंने वित्त मंत्रालय में संयुक्त सचिव, अतिरिक्त सचिव और विशेष सचिव की जिम्मेदारी निभाई।

राजीव एक सितंबर, 2017 से 29 फरवरी, 2020 तक वे केंद्रीय वित्त सचिव के पद पर रहे। बता दें कि अशोक लवासा ने पिछले महीने इस्तीफा दे दिया था। लवासा अब एशियाई विकास बैंक (एडीबी) के उपाध्यक्ष के रूप में जिम्मेदारी संभालेंगे।

विवादों के बीच जेईई मेंस की परीक्षाएं हुई शुरू, विरोध अभी नहीं हुआ खत्म

नई दिल्ली, जागरण ब्यूरो। कोरोना संकट और राजनीतिक विरोध के बीच छह दिनों तक चलने वाली जेईई मेंस की परीक्षा मंगलवार से शुरू हो गई है। अब भी जारी राजनीतिक विरोधो के बीच शिक्षा मंत्रालय ने दावा किया है, कि जेईई मेंस की पहले दिन की परीक्षाएं देश भर में सुचारू ढंग से संपन्न हुई है। यह परीक्षा देश भर में छह सितंबर तक चलेगी। देश भर के करीब 660 केंद्रों पर आयोजित हुई जेईई मेंस की इस परीक्षा के लिए वैसे तो साढ़े आठ लाख से ज्यादा छात्रों ने आवेदन किए है, लेकिन अब तक इनमें से करीब आठ लाख छात्रों ने ही अपने प्रवेश पत्र डाउनलोड

किए है। वैसे छात्रों को एनटीए ने अंतिम समय तक प्रवेश पत्र डाउनलोड करने का विकल्प दिया है। इस परीक्षाओं के शुरू होने के बाद ऐसा माना जा रहा था कि अब विरोध के सुर दब जाएंगे, लेकिन कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने मंगलवार को ट्वीट कर इस विरोध को फिर हवा दी। उन्होंने इसे लेकर सरकार पर फिर निशाना साधा और कहा कि अहंकार में सरकार जेईई मेंस और नीट के छात्रों को वाजिब चिंताओं को नहीं समझ रही है। वहीं अब तो वह एसएससी और दूसरी परीक्षा देने वाले छात्रों की मांगों की भी अनदेखी कर रही है। 'इस बीच जेईई मेंस की पहले दिन की परीक्षाओं को लेकर अफवाहों का भी बाजार गर्म था। लेकिन सोशल मीडिया के जरिए फैलाई जा रही इन अफवाहों पर एनटीए ने पैनी नजर रखी। साथ ही ऐसी सभी अफवाहों को जोरदार तरीके से खंडन भी किया।

देश भर में कोरोना का संक्रमण जब अपने चरम पर है साथ ही महाराष्ट्र, बिहार सहित कई राज्य बाढ़ की भीषण चपेट में है। ऐसे में बाढ़ और कोरोना से पीड़ित छात्रों के लिए एनटीए ने राहत के संकेत दिए है। ऐसे छात्रों को जेईई मेंस की परीक्षा में शामिल होने के बाद बाद में एक मौका दिया जा सकता है। हालांकि, अभी यह अंतिम फैसला नहीं है, लेकिन एनटीए ने परिस्थितियों को देखते हुए इस पर उचित फैसला लेने को कहा है। इसके लिए पीडित छात्रों को एनटीए को एक आवेदन देना होगा। जिसके साथ दावे को प्रमाणित करने वाले जरूरी दस्तावेज भी लगाना होगा। गौरतलब है कि एनटीए ने यह संकेत तब दिया है, जब बडी संख्या में छात्र और उनके परिजनों की ओर से इस तरह की समस्याएं रखी जा रही थी। बांबे हाईकोर्ट के सामने भी मंगलवार को ऐसे ही तर्क दिए गए थे।

शिक्षा मंत्रालय के सचिव बोले- राज्य सरकारों को बधाई

उच्च शिक्षा, शिक्षा मंत्रालय सचिव, अमित खरे ने कहा कि जेईई मेंस की परीक्षा मंगलवार को देश भर में सुचारू रूप से संपन्न हुई है। सभी राज्य सरकारों और एनटीए से जुड़े अधिकारियों को इसके लिए बधाई देता हूं, जिन्होंने परीक्षाओं को बेहतर तरीके से संपन्न कराने में हर संभव मदद की। साथ ही आगे भी इस तरह के सहयोग की उम्मीद करता हूं।

राजकीय सम्मान के साथ हुआ पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी का अंतिम संस्कार

नई दिल्ली, एजेंसिया। पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी का मंगलवार दोपहर 2 बजे लोधी रोड स्थित शवदाह गृह में राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। कोरोना से संक्रमित होने के कारण एसओपी के तहत उनका अंतिम संस्कार हुआ। इसके चलते उनके शव को गन कैरिज के बजाय वैन में यहां लाया गया। उनके पुत्र अभिजीत बनर्जी और परिवार के बाकी सदस्य पीपीइ किट पहने हुए नजर आएं।

भारत रत्न से सम्मानित पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी का सोमवार की शाम को 84 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। उन्हें गत 10 अगस्त को सेना के ह्यरिसर्च एंड रेफरल हास्पिटलह्ल में भर्ती कराया गया था। उसी दिन उनकी ब्रेन सर्जरी हुई। इस दौरान जांच में वह कोरोना वायरस से संक्रमित भी पाए गए थे। इसके बाद उनके हालत में सुधार नहीं हुआ। वह कोमा में थे और उनके फेफड़े व किडनी में संक्रमण हो गया था।

पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के निधन पर शोक व्यक्त करने के लिए बुधवार को दिल्ली में बांग्लादेश मिशन विशेष शोक सभा आयोजित करेगा। वहीं, चीन के विदेश मंत्रालय ने कहा कि प्रणब मुखर्जी भारत के एक अनुभवी राजनेता थे। राजनीति में अपने 50 वर्षों में उन्होंने चीन-भारत संबंधों में सकारात्मक योगदान दिया। यह चीन-भारत मित्रता और भारत के लिए एक भारी क्षति है। हम उनकी मृत्यु पर संवेदना व्यक्त करते हैं और सहानुभूति जताते हैं।

मंगलवार सुबह प्रणब मुखर्जी के पार्थिव शरीर को उनके आवास 10 राजाजी मार्ग पर अंतिम दर्शन के लिए लाया गया। यहां राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत अन्य लोगों ने पहुंचकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। केंद्र सरकार ने उनके सम्मान में 31 अगस्त से लेकर छह सितंबर तक सात दिन का राजकीय शोक घोषित किया है। सोमवार को उनके निधन पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, पीएम मोदी, अमित शाह, राहुल गांधी समेत कई नेताओं ने शोक जताया। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि एक युग का अंत हो गया। वहीं पीएम मोदी ने कहा कि उन्होंने राष्ट्रपति भवन को ज्ञान, विज्ञान एवं संस्कृति का केंद्र बना दिया।

वर्ष 1993 के बांबे धमाकों में सजायाफ्ता रियाज की जमानत अर्जी सुप्रीम कोर्ट में खारिज

नई दिल्ली, एएनआइ। सुप्रीम कोर्ट ने वर्ष 1995 में बिल्डर प्रदीप जैन से रंगदारी मांगने व उनकी हत्या के मामले में सजा पा चुके रियाज अहमद सिद्दीकी की जमानत अर्जी खारिज कर दी। महाराष्ट्र की यरवदा जेल में बंद 67 वर्षीय रियाज बिल्डर प्रदीप जैन की हत्या में उम्रकैद की सजा काट रहा है। वह वर्ष 1993 के बांबे सिलसिलेवार धमाकों में भी संलिप्त था और उसे 10 साल कैद की सजा भी हो चुकी है। वर्ष

1995 में बांबे का नाम बदलकर मुंबई किया गया है।

जस्टिस एनवी रमना की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा, 'दोनों पक्षों को सुनने के बाद हमें याचिकाकर्ता रियाज को जमानत देने का कोई कारण नहीं नजर आता, इसलिए जमानत अर्जी खारिज की जाती है।' पीठ में जस्टिस एस. अब्दुल नजीर व जस्टिस सूर्यकांत भी शामिल रहे। रियाज कोरोना संक्रमित पाया गया है और उसका अस्पताल में इलाज चल रहा है। उसने कोरोना संक्रमण का हवाला देते हुए अपने वकीलों के माध्यम से अंतरिम जमानत की मांग की थी।

भारतीय खगोलविदों ने ब्रह्मांड में खोजी एक और आकाशगंगा

नई दिल्ली, एएनआइ। भारतीय अंतरिक्ष विज्ञानियों ने ब्रह्मांड में सबसे दूर स्थित एक और स्टार गैलेक्सी (आकाशगंगा) की खोज की है। यह पृथ्वी से 9.3 अरब प्रकाश वर्ष की दूरी पर स्थित है। भारत सरकार के अंतरिक्ष विभाग ने मंगलवार को यह जानकारी दी। खगोलविदों की यह सफलता अंतरिक्ष मिशनों में एक ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में देखी जा रही है। इस उपलब्धि पर केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा, 'यह गर्व की बात है भारत की पहली मल्टी-वेवलेंथ स्पेस ऑब्जर्वेटरी 'एस्ट्रोसैट' ने पृथ्वी से 9.3 अरब प्रकाश वर्ष दूर स्थित एक आकाशगंगा से तीव्र-पराबैंगनी प्रकाश का पता लगाया है। अंतरिक्ष विभाग के मुताबिक, एयूडीएफएस01 नामक इस

आकाशगंगा की खोज इंटर-यूनिवर्सिटी सेंटर फॉर एस्ट्रोनॉमी एंड एस्ट्रोफिजिक्स (आइयूसीएए) पुणे के डॉ. कनक साह के नेतृत्व में खगोलविदों की एक टीम ने की थी। इस अहम खोज के महत्व और विशिष्टता के बारे में जर्नल नेचर एस्ट्रोनॉमी में विस्तार से बताया गया है। आइयूसीएए के निदेशक डॉ. सोमक रे ने कहा कि यह खोज एक महत्वपूर्ण सुराग है, जो यह बता सकता है कि ब्रह्मांड के अंधेरे युग कैसे समाप्त हुए और ब्रह्मांड में प्रकाश था। उन्होंने कहा हमें यह जानना चाहिए कि यह कब शुरू हुआ, लेकिन प्रकाश के शुरूआती स्त्रोतों को खोजना बेहद कठिन है।

ग्रामीण अंचल

प्रयागराज बुधवार, 2 सितम्बर, 2020

संक्षेप समाचार

टीजीटी संस्कृत-कला, पीजीटी कला का इंटरव्यू 21 सितंबर से

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने प्रवक्ता (पीजीटी) कला 2016 और प्रशिक्षित स्नातक (टीजीटी) कला व संस्कृत विषयों का साक्षात्कार कार्यक्रम सोमवार को घोषित कर दिया। इंटरव्यू 21 सितंबर से 22 अक्टूबर तक होने हैं। तिथिवार, विषयवार सूची वेबसाइट पर अपलोड है जिसके अनुसार अभ्यर्थी संस्था का विकल्प भरते हुए साक्षात्कार पत्र डाउनलोड कर सकते हैं। नियत तिथि व समय पर अपने मूल अभिलेखों के साथ साक्षात्कार के लिए उपस्थित होना है। प्रथम व द्वितीय बैच का रिपोर्टिंग टाइम क्रमशः 9 व एक बजे है। रिपोर्टिंग का अंतिम समय क्रमशः 12 व 4 बजे है। अभ्यर्थियों को फेसमास्क, हैंड ग्लब्स एवं सेनिटाइजर साथ लाना होगा।

अज्ञात वाहन की टक्कर से चाचा-भतीजे की मौत

चाचा भतीजे के आसमयिक मौत से समूचे गांव में मातमी सन्नाटा पसरा हुआ है

मेजा। मेजा थाना क्षेत्र के सोरांव गांव में सगे चाचा भतीजे की अज्ञात वाहन की टक्कर से मौत के बाद गांव में मातमी सन्नाटा पसरा हुआ है। प्राप्त जानकारी के अनुसार सोरांव गांव के मेजारोड रेलवे स्टेशन निवासी सुरेश जायसवाल अपने भतीजे विशाल उर्फ निन्नी (22) के साथ रविवार को मिजार्पुर से अपनी बाइक से घर लौट रहे थे। जैसे ही दोनो बिरोही के समीप पहुंचे ही थे की अज्ञात वाहन ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर लगने के कारण विशाल की मौके पर ही मौत हो गई। जिसमें चाचा सुरेश गंभीर रूप से घायल हो गए राहगीरों द्वारा उनके रिश्तेदारी में सूचना दी गई। मौके पहुंचे लोगों ने घायल सुरेश को इलाज के लिए मिर्जापुर ले गए बाद में हालत नाजुक देख उन्हें प्रयागराज के लिए रिफर कर दिया गया जहां सोमवार देर रात उनकी भी मौत हो गयी सगे चाचा भतीजे के आसमयिक मौत से समूचे गांव में मातमी सन्नाटा पसरा हुआ है। वही एक ही परिवार के दो सगे लोगों की मौत से परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है।

मृतकों के घर जुटी लोगों की भीड़

हाईकोर्ट समाचार

टीचरों की भर्ती में पुनर्मूल्यांकन परिणाम घोषित करने का 15 दिन का मिला समय

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने 68500 सहायक अध्यापक भर्ती मामले में पुनर्मूल्यांकन का परिणाम घोषित करने के अपने पूर्व के आदेश का पालन करने के लिए 15 दिन का और समय दिया है। कोर्ट ने सचिव परीक्षा नियामक प्राधिकारी अनिल भूषण से कहा है कि वह 15 दिन में आदेश का अनुपालन करें अथवा अदालत में हाजिर होकर स्पष्टीकरण दें। अंजना त्रिपाठी की अवमानना याचिका पर यह आदेश न्यायमूर्ति विवेक कुमार बिड़ला ने दिया है। याची के अधिवक्ता का कहना था कि हाईकोर्ट ने 68500 सहायक अध्यापक भर्ती में पुनर्मूल्यांकन का परिणाम तीन माह में घोषित करने का आदेश दिया था। इस आदेश का पालन नहीं किया गया तो अवमानना याचिका दाखिल की गई। सचिव परीक्षा नियामक प्राधिकारी ने और समय की मांग की। जिस पर कोर्ट ने 15 दिन का और समय दिया था। इसके बावजूद आदेश का पालन नहीं हुआ तो दुबारा अवमानना याचिका दाखिल की गई है। इस मामले में पहले से कई याचिकाएं दाखिल हैं। सचिव ने एक बार और समय दिए जाने की मांग की है। जिसे स्वीकार करते हुए कोर्ट ने 15 दिन में परिणाम घोषित करने या अदालत में सचिव को हाजिर होने का निर्देश दिया है।

बकाया पैसा न देने पर परिवार को शव न सौंपने का मामला, डीएम की रिपोर्ट पर हाईकोर्ट करेगा सुनवाई

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट कानपुर नगर के एक अस्पताल के खिलाफ साढे.14 लाख के ईलाज खर्च का बकाया परिजनों के जमा न करने पर कोरोना मरीज का शव परिवार को न सौंपने के मामले की सुनवाई दो सितम्बर को होगी। जिलाधिकारी कानपुर ने अस्पताल, मृतक के रिश्तेदारों व सिटी मजिस्ट्रेट के बयान लेकर हाईकोर्ट में रिपोर्ट दाखिल की है। कोर्ट ने रिपोर्ट को अपर महाधिवक्ता मनीष गोयल को देते हुए पक्ष रखने को कहा है। यह आदेश न्यायमूर्ति सिद्धार्थ वर्मा तथा न्यायमूर्ति अजित कुमार की खंडपीठ ने कंचन श्रीवास्तव की याचिका पर दिया है। याचिका अधिवक्ता सुनील कुमार की अर्जी पर कायम की गयी है। याची का कहना है कि 11 लाख रुपए जमा करने के बाद अस्पताल ने साढे.14 लाख जमा करने के बाद ही शव देने की शर्त रखी है। इस खबर को लेकर दाखिल अर्जी पर कायम जनहित याचिका पर कोर्ट ने जिलाधिकारी कानपुर नगर से जांच रिपोर्ट मांगी थी। यूपी में कोरोना वायरस महामारी की गंभीरता को देखते हुए हाईकोर्ट की यही बेंच इस महामारी पर नियंत्रण कैसे हो, इसे लेकर सुनवाई कर रही है। हाईकोर्ट ने यूपी में कोरोना वायरस महामारी के चलते खराब हालत को देखते हुए सरकार से पूछा है कि वह बताएं कि ऐसा क्या किया जाय कि केंद्र सरकार के निर्देश के अनुरूप लोग मास्क पहनने लगे।

हाइकोर्ट ने डॉ कफील को तत्काल रिहा करने का दिया आदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने मंगलवार को गोरखपुर बीआरडी मेडिकल कॉलेज में प्रोफेसर डॉ. कफील खान पर लगी रासुका व इसे बढ़ाने के आदेश को अवैध घोषित कर रद्द कर दिया है। हाईकोर्ट ने रासुका लगाने के राज्य सरकार की दलीलों को सही नहीं ठहराया। कोर्ट ने डॉ. कफील खान की तत्काल रिहाई का भी निर्देश दिया है। अलीगढ़ में नागरिकता संशोधन कानून को लेकर भड़काऊ भाषण देने के आरोप में रासुका कानून के तहत गिरफ्तार किए गए गोरखपुर के बीआरडी मेडिकल कालेज के प्रोफेसर डॉ. कफील खान को मंगलवार एक सितंबर को इलाहाबाद हाईकोर्ट बड़ी राहत दी। अदालत ने कहा कि रासुका के तहत गिरफ्तारी अवैध थी। इसलिए रासुका हटाया जा रहा है। डॉ. कफील की माँ ने बेटे की रिहाई के लिए बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका दायर की थी और रासुका आदेश को चुनौती दी थी। कहा गया था कि कफील खान को गलत फंसाया गया है। उसने ऐसा कोई काम नहीं किया जिससे उस पर रासुका लगाई जा सके। डॉ. खान की मां द्वारा दायर इस बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका में आरोप लगाया गया था कि उनके बेटे को अवैध रूप से हिरासत में लिया गया है और तुरंत रिहाई की जाए। इस केस की सुनवाई कर रही इलाहाबाद हाईकोर्ट की खंडपीठ में मुख्य न्यायाधीश गोविंद माथुर और जस्टिस सौमित्र दयाल सिंह रासुका लगाने से सम्बंधित सभी कानूनी पहलुओं पर विचार कर डॉ. खान के खिलाफ एनएसए के आरोपों को रद्द कर दिया। कोर्ट ने सरकार की इस दलील को नहीं माना कि वह अभी भी जेल से अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के छात्रों को भडकाने का काम कर रहे थे। कोर्ट ने कहा कि जेल में बंद होकर उसके पास ऐसा कुछ भी नहीं था जिसका प्रयोग कर वह जेल के अंदर से छात्रों को भड़काता। हाईकोर्ट ने सरकार की इस दलील को नहीं माना कि उसने देश विरोधी व भड़काऊ भाषण दिया है। हाईकोर्ट ने कहा कि रासुका लगाने से पूर्व उसे सीडी नहीं दी गयी जिसे देख अथवा सुनकर वह इस सम्बन्ध में अपनी सफाई दे सके। अलीगढ़ में भड़काऊ भाषण देने पर 13 फरवरी को उस पर रासुका लगा था। सीएए को लेकर भड़काऊ बयानबाजी करने के लिए जिलाधिकारी अलीगढ़ ने 13 फरवरी 2020 को कफील खान को रासुका में निरुद्ध करने का आदेश दिया था। यह अवधि दो बार बढ़ाई जा चुकी थी। याचिका में निरूद्धि की वैधता को चुनौती दी गई थी। हालांकि कफील खान को गोरखपुर के गुलहरिया थाने में दर्ज एक मुकदमे में 29 जनवरी 2020 को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका था। जेल में रहते हुए रासुका तामील कराया गया है। याची ने डॉ. कफील खान की रासुका को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी। सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट को मूल पत्रावली भेजते हुए इस मामले को तय करने का आदेश दिया था। इस मामले में प्रदेश सरकार और याची के सीनियर वकील द्वारा पहले भी कई बार समय मांगा गया था।

ग्राम प्रधान को हटाने के डीएम के आदेश पर रोक

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बस्ती जिले की टिकरिया रिक्खीपुर की ग्राम प्रधान अंजू देवी को जिलाधिकारी द्वारा पद से हटाने के आदेश पर रोक लगा दी है और राज्य सरकार से जवाब मांगा है। याचिका की अगली सुनवाई 27 सितम्बर को होगी। यह आदेश न्यायमूर्ति विवेक अग्रवाल ने अंजू देवी की याचिका पर दिया है। याची अधिवक्ता का तर्क था कि पंचायत राज अधिनियम की धारा 95(1)जी(3) को कोर्ट ने असंवैधानिक घोषित कर दिया है। इस धारा के तहत डी एम को ग्राम प्रधान को पद से हटाने का आदेश देने का अधिकार नहीं है। दूसरे जिला स्तरीय जाति स्क्रूटनी कमेटी ने गुलाब सिंह की शिकायत पर याची का जाति प्रमाणपत्र पत्र निरस्त कर दिया था। जिसे डिविजनल लेबल जाति स्क्रूटनी कमेटी ने रद्द कर दिया है और जिला स्तरीय जाति स्क्रूटनी कमेटी को जांच कर पुनर्विचार करने का निर्देश दिया है। इसके बावजूद तहसीलदार हरैया की रिपोर्ट को आधार लेकर डीएम ने विधि विरूद्ध आदेश पारित किया, जो अवैध है।

हत्या षड्यंत्र के आरोपियों की सशर्त जमानत मंजूर

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने हत्या व षड्यंत्र के आरोपी निवासी मऊ के सराय लखंसी घनश्याम गुप्ता व गुड्डू यादव की सशर्त जमानत मंजूर कर ली है। जमानत मंजूर कर कोर्ट ने कहा है कि शर्तों का उल्लंघन होने पर जमानत निरस्त की जा सकती है। यह आदेश न्यायमूर्ति समित गोपाल ने दिया है। याची अधिवक्ता निर्विकल्प पांडेय व रघुवंश मिश्र ने वीडियो कांफ्रेंसिंग से बहस की। 28 जनवरी 19 को सुबह 8 बजे आरोपियों सहित अज्ञात की फायरिंग में बाल गोविन्द सिंह की हत्या कर दी गयी। मृतक की पत्नी शीला सिंह ने एफआईआर दर्ज करायी है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में दो गोली लगने का खुलासा किया गया है। याची 27 मार्च 19 से जेल मे है। इनका कहना है कि सह अभियुक्त अभिमन्यु की जमानत हो चुकी है। फायरिंग का आरोप लालू यादव व हरिकेश पर है। इन्हें षड्यंत्र के आरोप में झूठा फंसाया गया है।

परचून की दुकान रात को नही खोलने पर दंपति पर हमला

घूरपुर। घूरपुर के सेमरा कल्बना गांव में परचून की दुकान रात को नही खोलने पर दंपतियों को पीटने का आरोप लगाया है। जबकि दुसरे पक्ष ने घर में घुस चोरी व मारपीट करने का आरोप लगाते दोनों पक्षों ने थाने में शिकायती पत्र दिया है। पुलिस ने दोनों पक्षों से एक-एक को गिरफ्तार कर जांच पड़ताल कर रही है।

सेमरा कल्बना गांव निवासी अनिल कुमार पुत्र मुन्नी लाल अपनी पत्नी रीता देवी गांव के घर में परचून की दुकान खोल रखा है। आरोप है कि रात 10बजे गांव के गंगा सिंह पुत्र बृज बहादुर सिंह दुकान बंद देख बौखला कर दुकान का दरवाजा पीटने लगा तो पत्नी रीता खोलकर बाहर निकली उसकी पिटाई कर दी पिटाई होते देख पति भी बाहर निकल पत्नी को बचाने लगा तो गंगा पक्ष से कई और लोग आ गए और अनिल पर भी हमला बोल दिए। जिससे दोनों घायल हो गए। वही गंगा सिंह ने आरोप लगाया कि अनिल कुमार घर में घुस चोरी कर रहा था जिसे पकड़ने पर चाकू से हमला कर घायल कर दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस दोनों पक्षों से एक-एक को गिरफ्तार कर लिया। दोनों पक्षों ने थाने में लिखित शिकायती पत्र दिया है। जिस पर पुलिस पड़ताल कर कार्रवाई कर रही है।

पति व जेठ ने विवाहिता पीटकर किया अधमरा

घूरपुर। घूरपुर इलाके के भीटा गांव में घरेलू विवाद को लेकर पति ने अपने बड़े भाई के साथ मिलकर लाठी डंडे से पिटाई कर अधमरा कर दिया। किसी तरह दोनों के चंगुल से भाग पड़ोस में भागकर जान बचाई। सूचना पर मायके से पहुंचा भाई तो उसे मारपीट कर घायल कर दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने पति को गिरफ्तार कर लिया जबकि जेठ मौके से भाग निकला।

भीटा गांव निवासी सुमन (35) पत्नी सियाराम सोमवार रात बच्चों के साथ घर पर थी। राशन नही था इसलिए वह भोजन तैयार नही कर सकी थी। रात नौ बजे पति सियाराम आया तो इसी बात को लेकर पत्नी में विवाद हो गया। और आक्रोशित हो अपने बड़े भाई पर्वत के साथ मिलकर लाठी डंडे से पिटाई करने लगा जिससे वह बुरी तरह घायल हो अधमरा हो गई। पड़ोस के घर में घुस जान बचाई। रात को ही सूचना पर अद्यौगिक थाना क्षेत्र के चनू का पूरा गांव के मायके से बड़ा भाई धर्मेद्र (30) पहुंचा तो उसे भी दोनों आरोपियों ने मारपीट कर घायल कर दिया।सूचना पर पहुंची पुलिस आरोपित पति को गिरफ्तार कर लिया। जबकि जेठ मौके से भाग निकला। मंगलवार सुबह पीड़िता मायके से आए पिता व भाइयों के साथ थाने पहुंच दोनों आरोपितों के खिलाफ शिकायती पत्र देकर कार्रवाई की मांग की। दोनों घायलों को पुलिस ने इलाज के लिए अस्पताल में भेजा। इंसाफ की मांग को लेकर पीड़ित परिजन थाने में देर तक बैठे रहे।

जेठ व पति से पीड़ित महिला परिजनों के साथ

जसरा रेलवे फाटक पर जाम लगने से बढ़ी परेशानी

जसरा। प्रयागराज-बांदा राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित जसरा रेलवे फाटक पर आये दिन लगने वाले जाम से रेलवे फाटक के दोनों ओर वाहनों की लम्बी कतारें लग जाने से दो पहिया व पैदल चलने वाले लोगों को खासी फजीहत झेलनी पड़ रही है। स्थानीय सांसद व विधायक इस पर ध्यान ही नहीं दे रहे हैं।

जबसे जसरा रेलवे फाटक पर डबल लाइन की ब्यवस्था शुरू हो गई है तबसे फाटक पर भीषण जाम लगने लगा है। स्थानीय ब्यापारियों का जाम से ब्यवसाय प्रभावित होने के कारण ब्यापारी इससे त्राहिमाम करने लगा है। जाम का मुख्य कारण लगातार ट्रेनों का आवागमन बताया गया है। वहीं इसी मार्ग से होकर प्रतिदिन उप जिलाधिकारी बारा को भी आना जाना पड़ता है लेकिन किसी की भी निगाह जाम की ओर नहीं जा रहा है। जाम में एम्बुलेंस भी फंस जाया करती है। भाजपा ब्यापार प्रकोष्ठ के मंत्री राजेश जायसवाल इसके लिए कई बार दिल्ली तक का दरवाजा खटखटा आये । लेकिन नगाड़ खाने में तूती की आवाज ही सुनाई नहीं दी। इसी तरह बाजार के प्रतिष्ठित ब्यापारी राजू केसरवानी, सुरेन्द्र केसरवानी सोनू, प्रमोद कुमार डंडा, जसरा ब्यापार मंडल के अध्यक्ष रामबाबू केसरवानी आदि ने जाम से निजात पाने की गुहार लगाया है।

जाम में फंसे राहगीर

बाइक चालक ने महिला को मारी टक्कर इलाज के दौरान, मौत

मऊआइमा। खेत की सिंचाई करके घर आ रही महिला को बाइक सवार चालक ने जोरदार टक्कर मार दी जिसे अस्पताल में भर्ती कराया गया था। उपचार के दौरान महिला की मौत हो गई । पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम कटरादयाराम निवासी रामचन्द्र गौतम पुत्र श्यामलाल अपनी पत्नी केवला देवी 50 वर्ष के साथ खेत की सिंचाई करके सोमवार की रात 11 बजे घर आ रही थी। बताया गया है कि जैसे केवला देवी जैसे खानपुर मोड पर पहुंची सामने से आ रहे बाइक चालक ने जोरदार टक्कर मारते हुए दूर तक घसीट ले गया । केवला देवी को नाजुक हालत में स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र ले जाया गया जहां उपचार के दौरान मंगलवार को सुबह मौत हो गई ।

जीवन भर याद रहेगें बारा के अविस्मरणीय पल

शंकरगढ़। शंकरगढ़ थाना परिसर में सेवानिवृत्त हुए सीओ बारा राम प्रकाश दोहरे को भावभीनी विदाई दी गई। शंकरगढ़ थाना परिसर में आयोजित विदाई समारोह में गमगीन सेवानिवृत्त सीओ बारा आरपी दोहरे ने अपने अतीत की यादों को साझा करते हुए कहा कि अपने कार्यकाल के दौरान आप लोगों का जो स्नेह और प्यार मिला वह मैं कभी नहीं भूल पाऊंगा।उन्होंने बताया कि परिवार प्राथमिक पाठशाला है, हमें ऐसे कार्य करना चाहिए जिसको सभी याद करें। साथी पुलिसकर्मियों के सहयोग की भी सराहना करते हुए भावुक श्री दोहरे ने सभी का आभार जताया और कहा कि सभी साथियों और क्षेत्रीय लोगों के साथ बिताए गए अविस्मरणीय पल हमेशा याद आएंगे।

एसओ राजेश उपाध्याय ने कहा कि सर के साथ काफी कम समय कार्य करने को मिला, लेकिन उनके अनुभव, व्यवहार ने बहुत कुछ सिखाया। उनके साथ बिताए गए अनुभव में पुलिस की कार्यप्रणाली को और अधिक बेहतर बनाने का मौका मिला। वही व्यापार मंडल के अध्यक्ष मूलचंद गुप्ता ने भी श्री दोहरे के सुखद और सुखमय जीवन की कामना करते हुए उनके व्यवहार को सराहा और कहा कि उनके कार्यकाल में व्यापारियों को बहुत सहूलियत थी, सेवानिवृत्त के बाद भी उनका कार्य सभी को याद आता रहेगा। इसके बाद सभी लोगों ने सेवानिवृत्त सीओ बारा और उनकी पत्नी को फूल, मालाओं से लाद दिया और बुके,अंगवस्त्रम भेंट करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। इस मौके पर एसओ राजेश उपाध्याय, नारीबारी चौकी प्रभारी जगदीश कुमार, उपनिरीक्षक कासिम खां, उपनिरीक्षक रमाशंकर, रमेश कुमार,पूर्व प्रधान महेंद्र शुक्ल, प्रधान पं. राजनाथ दुबे, अरुण सिंह, अशोक कुमार,व्यापार मंडल अध्यक्ष मूलचंद गुप्ता, महामंत्री रतन केसरवानी, उपाध्यक्ष जय केसरवानी, अरविंद केसरवानी, सोमनाथ वर्मा, समाजसेवी सतीश विश्वकर्मा आदि लोग मौजूद रहे।

सीआरपीएफ जवान सहित तीन कोरोना पाजिटिव

मऊआइमा। मऊआइमा क्षेत्र में कोरोना का कहर थमने का नाम नहीं ले रहा है। मंगलवार को टेस्टिंग के बाद तीन पाजिटिव पाए गए हैं। जिसमें एक सीआरपीएफ का जवान भी शामिल है।

मिली जानकारी के अनुसार मऊआइमा क्षेत्र में कोरोना का कहर निरंतर जारी है । बताया गया है कि ग्राम तिलई महमदपुर में एक महिला 42 वर्षा कोरोना पाजिटिव पायी गयी है। ग्राम नजरपुर में सीआरपीएफ का 40 वर्षीय जवान भी कोरोना पाजिटिव पाया गया है। मऊआइमा कस्बा के मोहल्ला आजमपुर में एक 24 वर्षीय युवक भी कोरोना पाजिटिव पाया गया है ।इस प्रकार मऊआइमा क्षेत्र में अब तक चार दर्जन लोग कोरोना पाजिटिव पाए गए हैं। जिनमें तीन दर्जन ठीक होकर घर वापस आ गए हैं । जिससे स्वाथ्य होने वालों की संख्या तेजी से बढ रही है । गनीमत रही कि अभी तक मऊआइमा क्षेत्र में कोरोना से किसी की भी मौत नहीं हुई है । क्षेत्र को निरंतर सेनेटाइजर किया जा रहा है । सभी पाजिटिवों को शहर के कोरोना अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

राष्ट्रीय आजीविका मिशन के तहत बतलाए गए आत्मनिर्भर के गुण

खीरी। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) के तहत मंगलवार को ग्राम सभा इटवा में महिलाओं को एकत्रित कर उन्हें आत्मनिर्भर बनने हेतु उन्हें समूह बनाकर कार्य करने की सलाह दी गई' बताते चलें कि राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के ब्लॉक मिशन मैनेजर बबउ सिंह पटेल एवं एहसान सिद्दीकी के नेतृत्व में कैंप का आयोजन किया गया तथा महिलाओं को एकत्रित होकर लघु उद्योग करने एवं उसे सफल बनाने के लिए आवश्यक राशि प्रदान करवाने की बात कही गई' उनका कहना था कि स्किल इंडिया के तहत लोगों को उन्हें जिस काम में निपुणता प्राप्त है उस काम के बारे में बतलाना एवं उन्हें धनराशि उपलब्ध कराना सरकार की प्रथम वरीयता है' ग्रामीण विकास मंत्रालय का उद्देश्य ग्रामीण गरीब परिवारों को देश की मुख्यधारा से जोड़ना और विभिन्न कार्यक्रमों के जरिए उनकी गरीबी दूर करना है 'इसी बात को ध्यान में रखते हुए मंत्रालय ने जून 2011 में आजीविका राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआ रएलएम) की शुरूआत की थी' आजीविका एन आर एल एम का मुख्य उद्देश्य गरीब ग्रामीणों को सक्षम और प्रभावशाली संस्थागत मंच प्रदान कर उनकी आजीविका में निरंतर वृद्धि करना' वित्तीय सेवाओं तक उनकी बेहतर और सरल तरीके से पहुंच बनाना और उनकी पारिवारिक आय को बढ़ाना है। आजीविका एनआरएलएम ने स्व सहायता समूह तथा संघीय संस्थानों के माध्यम से देश के 600 जिलों 6000 प्रखंडों एवं ढाई लाख ग्राम पंचायतों और 600000 गांव के 7 करोड़ ग्रामीण गरीब परिवार को दायरे में लाने का और 8 से 10 साल की अवधि में उन्हें आजीविका के लिए आवश्यक साधन जुटाने में सहयोग देने का संकल्प किया है' जो एक कार्यक्रम के माध्यम से पूर्ण होगा इसके लिए अतिरिक्त गरीब जनता को अपने अधिकारों और जन सेवाओं का लाभ उठाने में तरह तरह के जोखिम उठाने में और सशक्तिकरण के बेहतर सामाजिक संकेत को समझने में मदद मिलेगी' आजीविका एनआर एल एम इस बात में विश्वास रखता है कि गरीबों की सहज क्षमताओं का सदुपयोग हो और देश की बढ़ती अर्थव्यवस्था में उनका योगदान हो जिसके लिए उनकी सूचना, ज्ञान, कौशल संसाधन वित्त तथा सामूहिक की करण से जुड़े और उनके क्षमता का विकास हो' योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर महिलाओं के चेहरे पर खुशी देखने को मिली।

कैंप में महिलाओं को जागरूक करते हुए

15 देशी बम के साथ दो गिरफ्तार एक फरार भेजे गए जेल

घूरपुर। घूरपुर पुलिस ने मंगलवार की सुबह वाहनों की जांच करते समय एक टैम्पों को रोका तो टेम्पो चालक टेंपो लेकर भागने लगा ।पुलिस ने घेरकर पकड़ा तब तक एक भाग निकला ,टेंपो में सवार दो संदिग्धों को पुलिस थाने ले गई और तलाशी ली तो उनके पास से 15 देशी बम बरामद हुए ।पुलिस ने दोनों को जेल भेज दिया है । घूरपुर एसओ भुवनेश कुमार चौबे व एसएसआई वीरेंद्र प्रताप सिंह व चौकी गौहनिया प्रभारी शिव प्रताप सिंह मंगलवार की सुबह संदिग्ध वाहनों की जांच गौहनिया ओवर ब्रिज के पास कर रहे थे।इसी बीच एक संदिग्ध टेंपो आता दिखाई दिया जिसे पुलिस टीम ने रोकने का प्रयास किया तो चालक तेजी से टेंपो लेकर भागने लगा।पुलिस टीम ने घेरकर पकड़ा तब तक भाग निकला ।दो संदिग्धों को टेंपो समेत थाने ले जाकर तलाशी ली गई तो उनके पास से 15 देशी बम बरामद हुए पुलिस ने पकड़े गए हरिओम विश्वकर्मा निवासी जगदीशपुर थाना नवाबगंज व दिनेश गौड़ निवासी कीडगंज के खिलाफ केस दर्ज कर जेल भेज दिया तो वहीं भागने वाले बदमाश का नाम छोटू यादव निवासी कोतवाली बताया है ।

प्रयागराज हलचल

प्रयागराज बुधवार, 2 सितम्बर, 2020

संक्षेप समाचार

पांच पशुतस्कर गिरफ्तार, मुक्त कराए गए पांच गोवंसज

प्रयागराज। सोरांव थाने की पुलिस ने मंगलवार को गोवंसजों की तस्करी करने वाले गिरोह के पांच सदस्यों को डिहवा गांव के जंगल से गिरफ्तार किया। तस्करों के कब्जे से दो बैल, तीन गाय और चार बम,दो लोहे के चापर, एक लाठी एवं एक मोबाइल बरामद किया। गिरफ्तार तस्करों में सोरांव थाना क्षेत्र के जादवपुर गांव निवासी प्रेमचन्द्र उर्फ मक्खन पुत्र सूरजबली पाण्डेय, पड़ोसी मूलचन्द्र उर्फ नन्हें पुत्र जगत बहादुर, इसी थाना क्षेत्र के इमामकुलीपुर गांव निवासी अमित कुमार यादव पुत्र बाबूलाल यादव, जादवपुर गांव निवासी ओम प्रकाश पटेल पुत्र भगवानदीन पटेल, इमामकुलीपुर गांव निवासी दीपचन्द्र यादव है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अभिषेक दीक्षित के निर्देश पर पशुतस्करों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत मुखबिर की सूचना पर सोरांव थाने में तैनात उपनिरीक्षक धनन्जय कुमार सिंह के नेतृत्व में टीम ने डिहवा गांव के जंगल के समीप से गिरफ्तार किया। विधिक कार्रवाई करते हुए पांचों को जेल भेज दिया गया।

भूमाफिया पूर्व ब्लाक प्रमुख दिलीप मिश्रा की कुर्क होगी कारोंड़ो की सम्पत्ति

प्रयागराज। सपा नेता पूर्व ब्लाक प्रमुख दिलीप मिश्रा की अपराध से अर्जित कोरोंड़ो की सम्पत्ति जब्त करने का आदेश जिलाधिकारी ने जारी किया है। उक्त जानकारी देते हुए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अभिषेक दीक्षित ने मंगलवार को दिया। पुलिस को निर्देशित किया गया है कि चिन्हित की गई बारह सम्पत्तियां है। जिसमें लगभग सौ बीघा जमीन भी शामिल है। औद्योगिक थाना क्षेत्र के लवायनकला निवासी दिलीप मिश्रा चाका ब्लाक के पूर्व ब्लाक प्रमुख थे और सपा पार्टी से इनका सम्बन्ध है। वर्तमान में आपराधिक मुकदमों के चलते फतेहगढ़ जेल में बन्द है। इनके खिलाफ औद्योगिक थाने समेत शहर के विभिन्न थानों में आपराधिक मुकदमें दर्ज हैं।

अपर पुलिस अधीक्षक यमुनापार चक्रेश मिश्र ने बताया कि गैगेस्टर एक्ट के तहत कार्रवाई करते हुए जिलाधिकारी भानुचन्द्र गोस्वामी ने दिलीप मिश्रा के अपराध जगत में आने के बाद, कितनी सम्पत्ति अपराध से अर्जित किया है। इसकी जांच की जाय। प्रशासन के द्वारा कुल बारह सम्पत्तियां चिन्हित की गई। जिसमें लवायनकला गांव में मीरजापुर मार्ग पर पूर्व ब्लाक प्रमुख दिलीप मिश्रा का तीन मंजिला माकान, इनकी पत्नी अर्चना मिश्रा के नाम करछना के पूरा पाण्डेय गांव में कई बीघा जमीन है। इसके अतिरिक्त मायादेवी स्मारक शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान उनके बेटे के नाम है। लवायन कला गांव में इनके रिस्तेदार राम गोपाल मिश्रा के नाम है। शहर के बेनीगंज निवासी विष्णुदत्त तिवारी के नाम देवरख गांव में कई बीघा जमीन है। सूत्रों की माने तो लगभग 100 बीघा जमीन अपराध जगत से अर्जित की गई है। जिलाधिकारी ने निर्देश जारी किया है। माफिया दिलीप की चल एवं अचल सम्पत्ति को जब्त कर-के 18 सितम्बर तक आख्या प्रस्तुत की जाए। एसपी यमुनापार ने बताया कि मंगलवार को आदेश मिला है अब टीमें गठित होने के बाद तत्काल कुर्की की कार्रवाई शुरू कर दी जाएगी।

रेल पटरी पर मिला अज्ञात युवक का शव

मेजा। जीआरपी नैनी थानान्तर्गत मेजारोड रेलवे स्टेशन के पूर्व दिशा में रेलवे पटरी पर अज्ञात युवक का शव मिलने से हड़कंप मच गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार हावड़ा-दिल्ली रेल मार्ग के मेजारोड रेलवे स्टेशन के पूर्व दिशा में अपलाइन के खंभा नंबर 786/27/29 के बीच एक युवक (26) का शव मिलने से हडकंप मच गया। ड्यूटी में तैनात आरपीएफ के सिपाही रणधीर कुमार मौके पर पहुंचे।जहाँ शव को रेलवे पटरी से हटवा कर प्लेटफार्म पर रखवा दिया। खाफी छानबीन के बाद भी युवक की शिनाख्त नहीं हो पाई। आरपीएफ के द्वारा थाना जीआरपी नैनी को सूचना दी गई। मौके पर मौजूद लोगों का कहना है कि उक्त युवक या तो ट्रेन से गिरा है या आत्महत्या की है।वही उसके साथ किसी वारदात घटना को अंजाम दे दिया गया है इस बात से भी इंकार नही किया जा सकता।उक्त युवक का गर्दन से कटा शव पाया गया है ।खबर लिखे जाने तक युवक की शिनाख्त नहीं हो पाई।

जिले में 332 नए पॉजिटिव मरीज मिले, चार की गई जान

प्रयागराज। कोरोना वायरस का संक्रमण प्रयागराज में रुक नहीं रहा है। आलम यह है कि आए दिन सैकड़ों की संख्या में संक्रमित मरीज मिल रहे हैं। मंगलवार की सुबह से लेकर अभी तक 332 नए पॉजिटिव मरीज मिले। वहीं कोरोना वायरस की चपेट में आने से आज चार संक्रमित मरीजों की मौत हो गई। चिकित्सा विभाग और जिला प्रशासन महामारी के संक्रमण को रोकने के लिए हर प्रयास कर रहा है।

कोरोना वायरस की महामारी ने प्रयागराज के लोगों को परेशान कर रखा है। अब तक जिले में संक्रमित 158 मरीजों की मौत हो चुकी है। वहीं अब तक कोरोना वायरस से कुल 10 हजार लोग जनपद में संक्रमित हो चुके हैं। फिलहाल राहत की बात यह है कि कोरोना संक्रमण शुरू होने से लेकर अभी तक 7386 लोग स्वस्थ भी हो चुके हैं। वर्तमान में 2458 एक्टिव केस हैं।

मंगलवार को डीएम भानुचंद्र गोस्वामी ने स्वरूपरानी नेहरू अस्पताल परिसर में बन रहे प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (पीएमएसएसवाइ) भवन का निरीक्षण किया। इस दौरान वहां गंदगी और टेलीमेडिसिन के सामने मलबा पड़े होने पर नाराजगी जताई। कहा तत्काल वहां सफाई कराई जाए।

भवन का निरीक्षण करते समय डीएम ने वहां पर मौजूद व्यवस्थाओं की जानकारी ली। नई बिल्डिंग के सामने वार्ड 11 की छत से गिर रहे पानी पर नाराजगी जताई और मेडिकल कालेज के अभियंता को इसे तुरंत ठीक कराने का निर्देश दिया। मुख्य भवन के सामने रैंप में टूटी हुई रेलिंग को ठीक कराने को कहा। टेलीमेडिसिन की तोड़ी गई बाउंड्रीवाल का मलबा न हटाने पर डीएम ने नाराजगी जताई और उसे तत्काल हटाने के लिए पीडब्ल्यूडी के इंजीनियर को कहा।

मरीजों की सुविधा के लिए भवन के सभी वार्डों में साइन बोर्ड लगाने के लिए पीडब्ल्यूडी के अधिकारी को कहा। कहा कि बोर्ड लगे होने से मरीजों को इधर-उधर भटकना नहीं पड़ेगा। नई बिल्डिंग के सामने रास्ते में पड़ने वाले बिजली के पोल को हटाने के लिए प्रभारी अधिकारी विद्युत को निर्देशित किया। पीएमएसएसवाइ भवन में हेल्प डेस्क जल्द चालू कराने का निर्देश दिया। इस अवसर पर प्राचार्य डा. एसपी सिंह सहित अन्य अधिकारी थे।

बढ़ रहा है गंगा नदी का जलस्तर, रोका गया त्रिवेणी मार्ग आवागमन

गंगा-यमुना का जलस्तर बढ़ने से अपने सामानों को सुरक्षित जगह पर ले जाते हुए

प्रयागराज। गंगा नदी का जलस्तर मंगलवार को लगातार बढ रहा है। कानपुर बैराज से छोड़ा गया पानी सोमवार सुबह यहां पहुंचा तो बंधवा स्थित बड़े हनुमान मंदिर के सामने पार्क तक जल आ गया। इससे संगम जाने वाले सभी मार्गों को बंद कर दिया गया। उधर अरैल स्थित पक्का घाट के दोनोंगुंबद डूब पानी में गए हैं।

काली सड़क और अक्षयवट मार्ग पहले ही बंद कर दिया गया था और अब हनुमान मंदिर रोड व त्रिवेणी मार्ग पर भी आवागमन रोक दिया गया है। बंधवा ढाल पर दुकान लगाने वालों को भी हटने को कहा गया। गंगा-यमुना का जलस्तर बढने से अरैल घाट जलमग्न हो गया है। यहां बने दोनों गुंबद डूब गए हैं। जल पुलिस के जवान यहां तैनात कर दिए गए हैं। बाढ़ राहत दल पीएसी के जवान भी लगातार भ्रमण कर रहे हैं। सिंचाई विभाग बाढ़ प्रखंड के कंट्रोल रूम के मुताबिक 24 घंटे में नैनी, छतनाग में 33 और फाफामऊ में 23 सेंटीमीटर पानी बढ़ा है। अधिशासी अभियंता बृजेश कुमार का कहना है कि कानपुर बैराज से छोड़ा गया तीन लाख क्यूसेक पानी के पहुंचने के बाद जलस्तर में वृद्धि हुई है। नरौरा बैराज से करीब तीन लाख क्यूसेक पानी और छोड़ा गया है। जल पुलिस के प्रभारी कड़ेदीन यादव के मुताबिक गंगा में एक मीटर और बढ़ोतरी होने पर हनुमान जी के मंदिर में पानी प्रवेश कर जाएगा।

यमुना का जलस्तर तेजी से बढने के कारण सरस्वती घाट, बलुआघाट बारादरी, मनकामेश्वर मंदिर की और कई सीढियों पर पानी चढ़ गया है। बारादरी स्थित दो गुंबद पूरी तरह से डूब गए हैं, जबकि दो गुंबद आधे से अधिक जलमग्न हो चुके हैं।

गंगा-यमुना में बढ़ते जलस्तर के कारण तटीय इलाके पानी से घिरते जा रहे हैं। इससे यहां रहने वालों में हड़कंप मच गया है। लोग अपने-अपने जरूरी सामानों को नाते-रिश्तेदार और करीबियों के यहां पहुंचा रहे हैं। किराए पर रहने वाले भी अपना सामान समेटकर मकान खाली कर रहे हैं। एनडीआरएफ की टीम लगातार तटीय इलाकों में भ्रमण कर जायजा ले रही है।

एनईईटी व जेईई परीक्षा : सपाइयों ने राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन नायब तहसीलदार को सौंपा

नायब तहसीलदार को ज्ञापन सौंपते सपाई

प्रयागराज। समाजवादी पार्टी के नेता व छात्र सभा के प्रदेश सचिव प्रमिल यादव ने राज्यपाल संबोधित ज्ञापन नायब तहसीलदार मेजा विश्व दीपक त्रिपाठी को सौंपा। वहीं प्रमिल यादव ने कहा कि वैश्विक महामारी कोरोनावायरस से मंत्री, अधिकारी, नेता, डाक्टर, सहित देश की जनता संक्रमित हो रहे हैं। ऐसे में योगी सरकार द्वारा जेईई व एनईईटी का परीक्षा कराकर छात्रों का स्वास्थ्य खतरे डाल रही है। ऐसे मे कोरोना संक्रमण को देखते हुए छात्रों के हितों मे परीक्षा को स्थगित किया जाय। मेजा तहसील में सपाइयों ने जमकर नारेबाजी की और एनईईटी व जेईई की परीक्षा को स्थगित कराने के लिए राज्यपाल संबोधित ज्ञापन नायब तहसीलदार मेजा विश्व दीपक त्रिपाठी को सौंपा। वहीं छात्र सभा के प्रदेश सचिव प्रमिल यादव ने कहा कि जान के बदले एग्जाम नहीं चलेगा, योगी सरकार को न तो छात्रों की चिंता है और न ही किसानों की चिंता है। प्रदेश में सरकार का नही गुंडों का राज है। कानून व्यवस्था ध्वस्त है और योगी सरकार मस्त है। आकाश यादव शनि ने कहा कि प्रदेश में अपराध लगातार बढ़ रहा है और रोजगार घट रहा है। योगी सरकार पूरी तरह से विफल हो गई है। इस मौके पर प्रदेश सचिव छात्र सभा प्रमिल यादव, आकाश यादव शनि, प्रकाश यादव पिंकू, जिला पंचायत सदस्य सिरवई आदिवासी, अधिवक्ता सन्दीप यादव, श्यामकृष्ण पटेल, चंद्रशेखर यादव, संजय प्रधान, आशीष यादव, कमलेश, अंकुर, शिवम, अनुप, रवि, अजीत, सहित सैकड़ों समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

बमबाजी एवं जानलेवा हमला मामले में दो गिरफ्तार

प्रयागराज। धूमनगंज थाने की पुलिस ने मंगलवार को अबूबकरपुर मोहल्ले से 30 अगस्त की रात बमबाजी एवं जानलेवा हमला करने वाले दो अपराधियों को गिरफ्तार किया। पुलिस टीम ने दोनों के कब्जे से जानलेवा हमले में प्रयुक्त पिस्टल समेत दो असलहे एवं कारतूस बरामद किया है। दोनों के खिलाफ विधिक कार्रवाई करते हुए जेल भेज दिया गया। पकड़े गए आरोपितों में धूमनगंज के अबूबकरपुर निवासी लवकुश कुशवाहा एवं इसी थाना क्षेत्र के रम्मन का पूरा गांव निवासी सोनू भारतीय पुत्र स्वर्गीय महेश कुमार है। दोनों के खिलाफ धूमनगंज थाने में जानलेवा हमला, जान से मारने की धमकी समेत चार आपराधिक मुकदमें दर्ज है। गौरतलब है कि धूमनगंज के अबूबकरपुर निवासी वीरेन्द्र कुशवाहा को पुरानी रंजिश में 30 अगस्त की रात दहशत फैलाने के लिए बमबाजी की गई और गोली मारकर अपराधी फरार हो गए। उक्त जानकारी देते हुए पुलिस अधीक्षक नगर दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि उक्त दोनों अपराधियों ने पुनः 31 अगस्त की रात मुकदमा हटाने के लिए पीड़ित के घर पहुंचे और जान से मारने की धमकी देने लगे। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मौके से दोनों को गिरफ्तार कर लिया। दोनों के खिलाफ विधिक कार्रवाई करते हुए जेल भेज दिया।

साढ़े तीन घंटे बंधक रहे इविवि के कुलपति, चीफ प्रॉक्टर

प्रयागराज, जेएनएन। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति और चीफ प्रॉक्टर को आक्रोशित छात्रों ने साढ़े तीन घंटे बंधक बनाए रखा। उनकी मांगें मानने के आश्वासन पर छात्र शांत हुए। इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय (इविवि) में सोमवार को नौ छात्रों के निलंबन की कार्रवाई से मंगलवार को सैकड़ों छात्र आग बबूला हो गए। कुलपति कार्यालय का घेराव कर बाहर से ताला बंद कर दिया। करीब साढ़े तीन घंटे तक कुलपति, चीफ प्रॉक्टर बंधक बने रहे। चीफ प्रॉक्टर प्रोफेसर आरके उपाध्याय ने निलंबित छात्रों की बहाली तथा अन्य मांगों पर विचार का आश्वासन दिया तो छात्रों का गुस्सा शांत हुआ।

आक्रोशित छात्र

पितृपक्ष के एक माह बाद आएगी नवरात्र, 165 साल बाद ऐसा संयोग

जगद्गुरू विनैका बाबा

प्रयागराज। हर वर्ष पितृ पक्ष के समापन के अगले दिन से नवरात्र का आरंभ हो जाता है और घट स्थापना के साथ नौ दिनों तक नवरात्र की पूजा होती है। यानी पितृ अमावस्या के अगले दिन से प्रतिपदा के साथ शारदीय नवरात्र का आरंभ हो जाता है, जो इस साल नहीं होगा। इस बार श्राद्ध पक्ष समाप्त होते ही अधिकमास लग जाएगा। जिससे नवरात्र और पितृपक्ष के बीच एक महीने का अंतर आ जाएगा। आश्विन मास में मलमास लगना और एक महीने के अंतर पर दुर्गा पूजा आरंभ होना ऐसा संयोग करीब 165 साल बाद होने जा रहा है।

साकेत धाम के पीठाधीश्वर जगद्गुरू रामसुभग दास विनैका बाबा का कहना है कि यह लीप वर्ष होने के कारण ऐसा हो रहा है। इसलिए इस बार चातुर्मास जो हमेशा चार महीने का होता है, इस बार पांच महीने का होगा। कहा कि ज्योतिष की मानें तो 160 साल बाद लीप ईयर और अधिकमास दोनों ही एक साल में हो रहे हैं। चातुर्मास लगने से विवाह, मुंडन, कर्ण छेदन जैसे मांगलिक कार्य नहीं होंगे। इस काल में पूजन पाठ, व्रत उपवास और साधना का विशेष महत्व होता है। इस दौरान देव सो जाते हैं। देवउठनी एकादशी के बाद ही देव जागृत होते हैं। इस साल 17 सितंबर को श्राद्ध खत्म होंगे। इसके अगले दिन अधिकमास शुरू हो जाएगा, जो 16 अक्टूबर तक चलेगा। इसके बाद 17 अक्टूबर से नवरात्रि व्रत रखे जाएंगे। तत्पश्चात 25 नवंबर को देवउठनी एकादशी होगी। जिसके साथ ही चातुर्मास समाप्त होंगे। इसके उपरान्त ही शुभ कार्य शुरू होंगे।

उन्होंने बताया कि पंचांग के अनुसार इस साल आश्विन माह का अधिकमास होगा। यानी दो आश्विन मास होंगे। आश्विन मास में श्राद्ध और नवरात्रि, दशहरा जैसे त्योहार होते हैं। अधिकमास लगने के कारण इस बार दशहरा 26 अक्टूबर को तथा दीपावली भी काफी बाद में 14 नवंबर को मनाई जाएगी।

क्या होता है अधिक मास ?

एक सूर्य वर्ष 365 दिन और करीब 6 घंटे का होता है, जबकि एक चंद्र वर्ष 354 दिनों का माना जाता है। दोनों वर्षों के बीच लगभग 11 दिनों का अंतर होता है। ये अंतर हर तीन वर्ष में लगभग एक माह के बराबर हो जाता है। इसी अंतर को दूर करने के लिए हर तीन साल में एक चंद्र मास अतिरिक्त आता है, जिसे अतिरिक्त होने की वजह से अधिकमास का नाम दिया गया है। अधिकमास को कुछ स्थानों पर मलमास भी कहते हैं। इस पूरे माह में सूर्य संक्रांति न होने के कारण यह महीना मलिन मान लिया जाता है। इस कारण लोग इसे मलमास भी कहते हैं। जिससे कोई भी शुभ कार्य नहीं किए जाते हैं। पौराणिक मान्यताओं में बताया गया है कि मलिनमास होने के कारण कोई भी देवता इस माह में अपनी पूजा नहीं करवाना चाहते थे और कोई भी इस माह के देवता नहीं बनना चाहते थे। तब मलमास ने स्वयं श्रीहरि से उन्हें स्वीकार करने का निवेदन किया। तब श्रीहरि ने इस महीने को अपना नाम दिया पुरुषोत्तम। तब से इस महीने को पुरुषोत्तम मास भी कहा जाता है। इस महीने में भागवत कथा सुनने और प्रवचन सुनने का विशेष महत्व माना गया है।

डम्फर की टक्कर से एक घायल

करछना। मंगलवार सुबह करीब 9 एक गार्ड डियूटी से वापस घर लौट रहा था जैसे ही वह भीरपुर के समीप पहुंचा था कि पीछे से तेज रफ्तार आ रहा डफर बाइक सवार को टक्कर मार दी।जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया।क्षेत्र के बस्तर हौजकटोरवा गाव निवासी राजकुमार पटेल 20 पुत्र श्यामलाल पटेल मसिका स्थित जीएमआर कम्पनी मे गार्ड है।

ट्रेनों के आगमन-प्रस्थान स्वतः ही डिस्प्ले बोर्ड पर होंगे अपडेट

प्रयागराज। रेल परिचालन में समय की पाबंदी और सुरक्षा को मजबूत करने हेतु सिगनल और दूरसंचार विभाग द्वारा सिगनलिंग प्रणाली में लगातार सुधार किया जा रहा है। जिसके तहत ट्रेन टाइमिंग डिस्प्ले बोर्ड को एनटीईएस के साथ एकीकृत किया गया है, जो ट्रेनों के आगमन-प्रस्थान स्वतः ही डिस्प्ले बोर्ड पर स्वचालित रूप से अपडेट हो जाएंगे। जनसम्पर्क अधिकारी केशव त्रिपाठी ने बताया है कि अब से प्रयागराज मंडल के सभी महत्वपूर्ण स्टेशनों पर ट्रेन टाइमिंग डिस्प्ले बोर्ड को एनटीईएस के साथ एकीकृत किया गया है, जो सुनिश्चित करेगा कि ट्रेनों के सभी आगमन-प्रस्थान स्वतः ही बिना किसी मानव हस्तक्षेप के डिस्प्ले बोर्ड पर स्वचालित रूप से अपडेट हो जाएंगे। ट्रेन टाइमिंग डिस्प्ले बोर्ड के साथ एनटीईएस एकीकरण वाले स्टेशनों में प्रयागराज, मानिकपुर, कानपुर, खुर्जा, फतेहपुर, मिजार्पुर, विंध्याचल, भरवारी, फिरोजाबाद, सिराथू, नैनी, अलीगढ़, इटावा, सूबेदारगंज, चुनार, फफूँद, एवं प्रयागराज छिवकी हैं। इन स्टेशनों के ट्रेन टाइमिंग डिस्प्ले बोर्ड को नेशनल ट्रेन इन्क्वाइरी सिस्टम से जोड़ दिया गया है। अब ट्रेनों के आगमन प्रस्थान की जानकारी आटोमेटिक अपडेट होती रहेगी। श्री त्रिपाठी ने बताया कि फफूंद स्टेशन के प्लेटफॉर्म एक पर यात्रियों की सुविधाओं को ध्यान रखते हुए कोच गाइडेंस डिस्पले बोर्ड लगाए गए हैं। इस स्टेशन से यात्रा करने वाले यात्री प्लेटफॉर्म पर ट्रेन आने से पूर्व ही अपने आरक्षित बोगी की जानकारी डिस्प्ले बोर्ड के माध्यम से प्राप्त कर पाएंगे।

अखण्ड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम कियायोग आश्रम एवं अनुसंधान सस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम

पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं0: UPHIN2001/9025

महापौर ने जल कर के बढ़े दरों की शिकायत पर की कार्यकारिणी बैठक

कार्यकारिणी की बैठक की अध्यक्षता करतीं महापौर

प्रयागराज। महापौर प्रयागराज अभिलाषा गुप्ता नन्दी ने जल कर के बढ़े दरों की शिकायत पर मंगलवार को कार्यकारिणी की अनौपचारिक बैठक आहूत की। जिसमें निर्णय लिया गया कि जिन उपभोक्ताओं द्वारा 2014-15 के पूर्व से जल कर राशि पर प्रभार इत्यादि की धनराशि का भुगतान नहीं किया जा रहा है। ऐसे उपभोक्ताओं से बढ़े मूल्यांकन के आधार पर एरियर धनराशि की वसूली की जाएगी।

वर्तमान में जलकल विभाग द्वारा उपभोक्ताओं वित्तीय वर्ष 2014-2015 से बढ़े मूल्यांकन के आधार पर जलकर इत्यादि की वसूली हेतु पुराने मूल्यांकन व नए मूल्यांकन के अंतर आधार पर जो एरियर की धनराशि की वसूली हेतु बिल प्रेषित किए जा रहे हैं तथा वसूली की जा रही है। सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि आवासीय व व्यवसायिक भवनों के जिन उपभोक्ताओं द्वारा वित्तीय 2014-15 के पूर्व से जल कर राशि पर प्रभार इत्यादि की धनराशि का भुगतान नहीं किया जा रहा है। मात्र ऐसे ही उपभोक्ताओं से वित्तीय वर्ष 2014-15 से बढ़े मूल्यांकन के आधार एरियर धनराशि की वसूली की जाएगी तथा ऐसे समस्त उपभोक्ताओं जिनके द्वारा वित्तीय वर्ष 2014-15 से वित्तीय वर्ष 2019-20 में मध्य जलकर इत्यादि का बिल भुगतान नहीं किया जा सका है। ऐसे समस्त उपभोक्ताओं से बढ़े मूल्यांकन के आधार पर एरियर के धनराशि की वसूली नहीं की जाएगी। ऐसे उपभोक्ताओं को मात्र वित्तीय वर्ष 2020-21 से ही बढ़े हुए मूल्यांकन के आधार पर जल कर इत्यादि का भुगतान करना होगा।

बैठक में निर्णय लिया गया कि ऐसे उपभोक्ता जिनके द्वारा विगत 10 वर्षों से अधिक समय से जलकर इत्यादि की धनराशि नहीं जमा की जा रही है, ऐसे उपभोक्ताओं को नगर निगम अधिनियम 1959 तथा उत्तर प्रदेश जल संभरण व सीवर व्यवस्था अधिनियम 1975 प्रावधानों के तहत आर.सी के माध्यम से अथवा सम्बंधित उपभोक्ता बैंक सीज करते हुए बकाया धनराशि की वसूली सुनिश्चित की जाए। ऐसे समस्त उपभोक्ता जिनके द्वारा वर्तमान वित्तीय 2020-21 में बढ़े हुए मूल्य मूल्यांकन के आधार पर धनराशि जलकल विभाग में जमा करा दी गई है किंतु वह छूट के दायरे में आते हैं, ऐसे उपभोक्ताओं द्वारा जमा की गई धनराशि का समायोजन आगामी वर्ष के जलकर इत्यादि के बिलों में किया जाएगा। बैठक में रवि रंजन नगर आयुक्त, हरीश चंद्र बाल्मीकि महाप्रबंधक जलकल प्रयागराज, पीके मिश्रा मुख्य कर निर्धारण अधिकारी, सौरभ श्रीवास्तव अधिशासी अभियंता जलकल विभाग, सुजीत कुमार प्रभारी लेखाधिकारी जलकल विभाग, कार्यकारिणी सदस्य अशोक कुमार सिंह आदि रहे।

प्रयागराज बुधवार, 2 सितम्बर, 2020

क्रियायोग सन्देश

क्रियायोग से योग के वास्तविक स्वरूप की द्रुति गति से अनुभूति

मानव जीवन का लक्ष्य योग अवस्था की अनुभूति प्राप्त करना है। योग का अभिप्राय शीर्ष आसन, सूर्य नमस्कार और अनेक तरह से शारीरिक तोड़.मरोड़ का व्यायाम, व अप्राकृतिक तरीके से स्वास - प्रस्वास की तीब्र क्रियाओं के अभ्यास से नहीं है। यह सब जो योग के नाम पर सिखाया जाता है, वह अधूरा योग है । श्रीमदभगवदगीता, पतंजलि योगदर्शन, बाइबिल, कुरान, गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, कबीर साहेब, नानक देव जी, आदि की शिक्षाओं में योग और प्राणायाम का वर्णन इस तरह से नहीं किया गया है।

जब हम क्रियायोग का अभ्यास करते हैं , तब हमें महसूस होता है कि सत्य क्या है। सत्य अनुभव होने पर हम पूर्ण ज्ञान से जुड़ जाते हैं। ऐसी स्थिति मे जब हम अज्ञानी के पास जातें हैं तब भी खुश होंते हैं और ज्ञानी के पास जाते हैं तब भी खुश होंते हैं । योग की अवस्था में हमें समय व दूरी की शून्यता का अनुभव होता है। इस अवस्था में हमें अपने सर्वव्यापी स्वरूप का दर्शन होता है।

जब तक हम जातिवाद, संप्रदायवाद, क्षेत्रवाद, अपने व परायेवाद के मायावी जाल में फसें रहेंगे, तब तक हम योग की स्थिति में नहीं आ पाएंगे। क्रियायोग के अभ्यास से हम आसानी से मायावी जाल के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं।

आने वाले समय मैं अंग्रेजी बहुत जल्दी से बढ़ेगी। इसलिए कि अंग्रेजी फ्लैक्सिबल भाषा है, एक

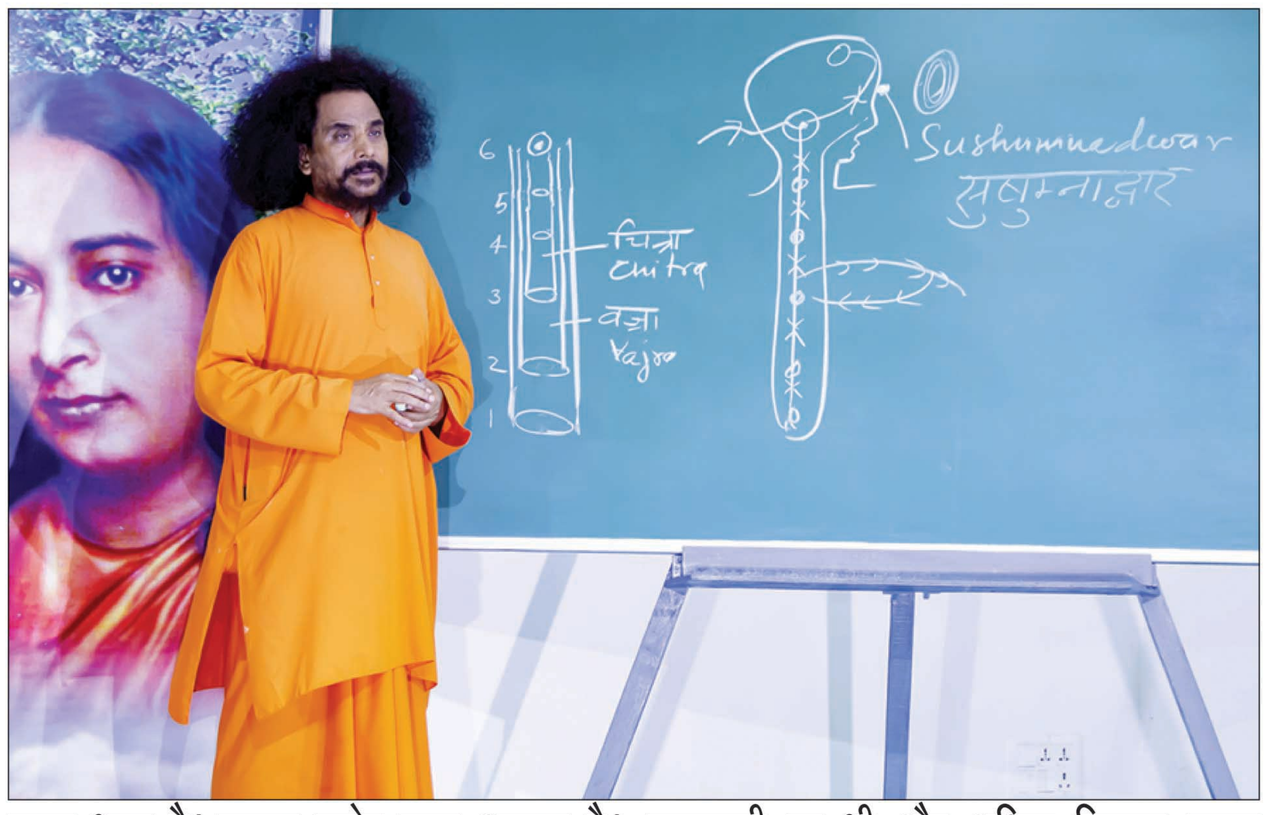

उदार भाषा है। इसका प्रयोग बहुत आसान है। इसलिए यह भाषा दूर-दूर तक जल्दी से फैलेती जा रही है। अंग्रेजी के शब्दकोश में अलग-अलग भाषाओं के शब्दो को जोड़ कर हम इसका विस्तार करते जा रहें हैं। इसीलिए अंग्रेजी का विस्तार तीव्रता से हो रहा है । इसी तरह हमें हिंदी शब्दावली का भी और अधिक विस्तार करना चाहिए। हिंदी शब्दकोश मेंअंग्रेजी और अनेक भाषाओं के शब्दों को जोड़ते जाना चाहिए, ऐसा करने से हिंदी का शीघ्रता और अधिक विस्तार होगा।

KRIYAYOGA BRINGS QUICK REALIZATION OF STATE OF YOGA

In Human civilization, the perfect aim of human being is to achieve the state of Yoga, which means to experience absence of distance between all things. For example, distance between nations, languages, castes, races, creeds and religions. When we completely dissolve conflicts that occur among us, then we have attained the state of yoga.

However, at the present time period, we think that we practise Yoga by doing head stands, arm stands, Suryanamaskar, wheel posture and many other different types of tortuous body postures, and practice of pranayam as unnatural forceful breathing exercises. If such exercises were indeed the practice of Yoga, then they should have been demonstrated in the same way in the ancient spiritual texts that we know – Bhagavad Gita, Ramayana, Ram Charitmanas, Patanjali Yog Darshanam, teaching of Buddha and Mahaveer Swami, Quran, Bible, Japji Saheb etc. However, this is not so.

FILE PHOTO

The real definition of Yoga is that it is a state of timeless, spaceless existence where one experiences their nature as Omnipresence Consciousness. When we understand this important point, we will come to know the Truth behind all forms of unnatural practices in the name of Yoga. State of Yoga brings the realization that “God Alone exists”. God has become all creations of Cosmos - Universes, Galaxies, Stars, Planets, Sky, Air, Fire, Water, Earth, atoms, molecules, plants, animals, human beings, angels etc.

When we attain the state of Yoga, we will be able to exhibit our greatest nature - true humbleness towards all. Our work and decisions will be for benefit of all and we will be most flexible in nature. Any form of creation which is most flexible will expand far and wide. Take for example the English language. Due to its flexible form of expression and acceptance, it is easily adopted by all as a means of communication. For this reason, the English language has spread far and wide and will continue to do so, providing convenience to people all over the world.